शब्द–ब्रह्म
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
E ISSN 2320 – 0871
17 सितम्बर 2017
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

इन्दौर जिले में शिक्षित महिलाओं के रोजगार अवसरों की संभावनाओं का सामाजिक परिवेश के संदर्भ में अध्ययन

*डॉ. सपना सोनी
**दीपक शर्मा
*प्राध्यापक (वाणिज्य विभाग),
शहीद भीमा नायक शास. स्नातकोत्तर महाविद्यालय, बड़वानी
**शोधार्थी (वाणिज्य)
देवी अहिल्या विश्वविद्यालय
इन्दौर, मध्यप्रदेश, भारत

शोध संक्षेप

आज महिलाएं विभिन्न क्षेत्रों में पुरुषों से प्रतिस्पर्धा कर रही हैं। अशिक्षित होने से पहले उनके पास रोजगार के सीमित विकल्प उपलब्ध थे। उनके शिक्षित होते ही रोजगार के अनेक अवसर मिल रहे हैं। किसी भी समाज की उन्नति का पैमाना स्त्रियों की स्थिति से भी लगाया जाता है। शिक्षित और रोजगार संपन्न महिलाएं समाज और देश के विकास में अपना योगदान प्रदान करती हैं। प्रस्तुत शोध पत्र में इंदौर जिले में शिक्षित महिलाओं के रोजगार अवसरों की संभावनाओं के बारे में जानकारी प्रदान की गयी है।

प्रस्तावना

आधुनिक युग में राष्ट्र की प्रगति में महिलाओं का महत्वपूर्ण योगदान है। सरस्वती मिश्रा ने अपनी पुस्तक 'स्टेट ऑफ़ इंडियन वुमेन्स' में महिलाओं की विभिन्न समस्याओं के विषय में उल्लेख किया है। स्वतंत्रता के पश्चात भारतीय महिलाओं की कार्यप्रणाली में परिवर्तन हुआ है। आज की नारी सभी क्षेत्रों में कार्यरत है। भारतीय औद्योगिक विकास में महिलाओं की भागीदारी में वृद्धि हुई है। हर क्षेत्रों में पुरुषों की भांति नारी भी योगदान दे रही है, किंतु महिलाओं के साथ समानता का व्यवहार नहीं किया जा रहा है। कार्यस्थल पर महिला कर्मचारियों की संख्या 22 प्रतिशत पाई गई है। भारतीय अर्थव्यवस्था का परिदृश्य बदल रहा है। विकासशील समाज में महिलाओं का सार्थक योगदान रहा है। भारतीय अर्थव्यवस्था में सभी क्षेत्रों में लिंग असमानता पाई गई है। मजदूरी में भी असमानता पाई गई है। इस अंतर को कम करने के लिए विद्वानों कई सुझाव दिये हैं।

पेशेवर महिलाओं को दोहरी भूमिका निभानी पड़ती है। राजेन्द्र प्रसाद जसवाल ने अपनी पुस्तक 'महिला की व्यावसायिक स्थिति' में पुरूषों एवं महिलाओं के मध्य होने वाले भेदभाव का विस्तार से वर्णन किया है। उन्होंने महिलाओं के अधिकारों एवं उनके अवसरों में वृद्धि आदि की जानकारी दी है। उन्होंने कहा है की उत्पादन में महिलाओं का समान योगदान है। राष्ट्रीय विकास संघ ने महिला कर्मचारियों के योगदान

पर जोर दिया है। विभिन्न स्तरों पर महिला कर्मचारियों के प्रतिकूल प्रभावों का वर्णन किया है। कृषि और औद्योगिक विकास में महिलाओं की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। विभिन्न लेखकों ने व्यवसायों व कृषि क्षेत्र में महिलाओं की भूमिका व भागीदारी की ओर ध्यान केन्द्रित किया है। कार्यस्थल पर महिला कर्मचारी द्वारा सामना कि गई समस्याओं का वर्णन किया है। पुरूष व महिलाओं के मध्य असमानता का वर्णन किया है। औपचारिक उत्पादन प्रणाली पारिवारिक जिम्मेदारियों के साथ प्रजनन की दोहरी भूमिका निभाते हर सभी के मध्य संतुलन बनाना एक महत्वपूर्ण समस्या है।

सेवा क्षेत्र में रोजगार

भारत में बैंकिग क्षेत्र में महिलाओं के लिए अपार संभावनाए हैं। भारत में आबादी के अनुपात में अभी भी बैंकिंग सेवाओं का कम प्रयोग होता है। अशिक्षित मजदूर बैंकिग सेवाओं का प्रयोग नहीं कर पाते। चूंकि उन्हें बैंकिग सेवा का उपयोग करना नहीं आता। उनमें भी महिलाओं का प्रतिशत तो और भी कम हो जाता है।

भारत में निजी बैंक जैसे आईसीआईसीआई बैंक की सीईओ चंदा कोचर हैं, जो देश की दूसरी महिलाओं के लिए प्रेरणा स्रोत हैं। इन्हीं महिलाओं की सूची में शिखा शर्मा एक्सिस बैंक की पूर्व सीईओ रेणु सूद करनाद एचडीऍफ़सी बैंक की सीईओ उषा अनंत सुब्रम्हन्यम इलाहाबाद बैंक सीईओ नैनालाल किदवई जो कि एचएसबीसी बैंक की प्रबंधकारी हैं। इन सभी महिलाओं में सिद्ध किया है कि महिलायें बैंकिग क्षेत्र में बहुत अधिक अच्छा प्रदर्शन कर रही हैं। इन्हें वैश्विक स्तर पर मान्यता मिली है।

साहित्य का पुनरावलोकन

प्रो.कालैकर (2016) ने अपने अध्ययन में यह निष्कर्ष निकाला कि जो गांव शहर के समीप है वहां की महिलाएं अधिक मिश्रित हैं तथा रोजगार के अवसर भी हर क्षेत्र में उपलब्ध होते हैं। इस प्रकार गांव का शहर से दूर या पास होना तथा आवागमन की सुविधा भी महिला शिक्षा तथा रोजगार की संभावनाओं को प्रभावित करता है।

प्रो. झारिया (2016) ने अपने आलेख में महिला रोजगार के संदर्भ में लिखा है कि मध्यप्रदेश में महिलाओं के लिए रोजगार की अपार संभावनाएं हैं। आवश्यकता इस बात की है कि शासन के साथ-साथ स्वैच्छिक संस्थाएं भी इस दिशा में आगे आकर कार्य करें।

डॉ. कुण्डु (2015) ने अपने आलेख में लिखा है कि यह एक सामान्य सत्य है कि भारत में महिलाओं की कार्य सहभागिता दर में वृद्धि धीमी रही है। ऊन्होंने स्पष्ट किया कि यद्यपि शिक्षित महिलाओं की संख्या में वृद्धि हुई है लेकिन पिछले कुछ वर्षो में महिलाओं में कार्य सहभागिता दर की वृद्धि मेंकुछ कभी आयी है। औद्योगिक इकाइयों में रात की पाली में कार्य करने में असमर्थता तथा दरों में भेदभाव इसका कारण है। उन्होंने यह भी स्पष्ट किया कि शिक्षा तथा रोजगार में प्रत्यक्ष सम्बन्ध होता है। महिला शिक्षा में वृद्धि सामाजिक संरचना के निर्माण में अप्रत्यक्ष रूप से लाभ प्रदान करती है। सामाजिक एवं आर्थिक विकास पर शोध में उद्योगो में काम करने वाली महिलाओं का यह निष्कर्ष निकाला गया कि महिलाएँ सुबह से शाम तक उद्योगों तथा प्रवासी ठेकेदारों के मध्य कार्य करती हैं, जिनको उचित मजदूरी नहीं मिल पाती। इनका शोषण बलात् किया जाता है क्योंकि निरक्षरता इनकी कमजोरी है।

बेला मनोत (2007) नें राज व्यवस्था में महिलाओं की सहमामिता का अध्ययन किया है। उनके अनुसार महिला जनप्रतिनिधि कार्य के प्रति जिम्मेदारी का निर्वहन करने में समर्थ होती जा रही है। अतः महिलाओं का शिक्षा, प्राथमिकता तथा जातीय पारिवारिक, सामाजिक, व्यक्तिगत समस्या से उनकी निवृ ति होने की आवश्यकता है।

आदर्श शर्मा (2004) ने महिला शिक्षा, औचित्य एवं रोजगार की संभावनाओं का अध्ययन किया है। उनके अनुसार महिलाओं के अन्तर्गत शक्ति एवं योग्यता अन्तर्निहित है, जिसका उपयोग समाज के विकास की आवश्यकता की पूर्ति के लिये जरूरी है और इस संदर्भ में पुरूष एवं महिला के दोहरे मापदण्ड को अपने अनुभविक अध्ययन में लगाने का सुझाव दिया है।

पाण्डेय जी. डी.(1993) में शिक्षित महिलाओं के रोजगार की संभावनाओं का तुलनात्मक अध्ययन किया, जिसमें निम्न निष्कर्ष ज्ञात हुआ। ग्रामीण शिक्षित महिलाओं की तुलना में शहरी महिलाओं की रोजगार की संभावना अधिक है। ग्रामीण महिलाओं का मुख्य व्यवसाय कृषि है, जबकि शहरी महिला का मुख्य व्यवसाय सेवा क्षेत्र स्वरोजगार व उद्योग होता है।

वर्मन (1990) ने अपने अध्ययन में भारत की शिक्षित महिलाएँ तथा विकास की चुनौतियों को अध्ययन किया जिसमें यह निष्कर्ष निकाला कि समाज में परम्परागत शिक्षा महिलाओं के विकास के लिए पर्याप्त नहीं होती है। इनके लिए समय-समय पर प्रशिक्षण योजनाओं के शिविर आयोजित किए जाने चाहिए, जिससे जहाँ एक और इनका प्रशिक्षण होगा। दूसरी ओर इन्हें रोजगार प्राप्त करने के सामान अवसर प्राप्त होंगे।

सच्चिदानन्द (1989) ने भी शिक्षित महिलाओं के कृषि क्षेत्र में शिक्षित महिलाओं का योगदान देश की राष्ट्रीय आय में कृषि का योगदान करीब एक तिहाई है। कृषि क्षेत्र में मिश्रित महिलाओं की भागीदारी तेजी से बढ़ रही है और कृषि महिलाओं की गतिविधि बनती जा रही है। सरकारी अनुमान के अनुसार देश में कृषि और स्वरोजगार में लगे लोगों में लगभग आधी संख्या महिलाओं की है। इन्दौर क्षेत्र की कुल महिलाओं का 31.9 प्रतिशत कृषि संबंधित औद्योगिक क्षेत्रों मे लगा है। कृषि में महिलाओं, पर्यावरण और ग्रामीण उत्पादन से संबंधित खाद्य और कृषि संगठन के एक दस्तावेज के अनुसार विभिन्न कृषि उत्पादन प्रगतियों में उनकी भागीदारी का स्वरूप तथा व्यापकता अलग-अलग है।

शोध अध्ययन के उद्देश्य

1. इन्दौर जिले की शिक्षित महिलाओं का उनके आर्थिक जीवन पर पड़ने वाले प्रभाव के बारे में जानना।

शोध परिकल्पना

शिक्षित महिलाओं के रोजगार अवसरों की संभावनाओं का प्रभाव सामाजिक परिवेश में वृद्धि पर सकारात्मक है।

शोध विधि

प्राथमिक संमक सकंलन हेतु इन्दौर शहर के सेवा क्षेत्र से सम्बन्धित 300 शिक्षित महिलाओं का चयन किया गया तथा चयनित उत्तरदाता से संरचित प्रश्नावलियों के माध्यम से समंकों की प्राप्ति की गयी है।

इस शोध के अन्तर्गत प्राथमिक समंकों का विश्लेषण सविचार निर्देशन विधि, एवं दैव निर्देशन विधि के माध्यम से किया गया है, जिसमें चयनित 300 शिक्षित महिलाओं से प्रश्नावली के माध्यम से जानकारी प्राप्त की गयी।

विश्लेषण विधि

इस विधि के अन्तर्गत रोजगार के अवसर की संभावनाओं का आवश्यकतानुसार वर्गीकृत व सारणीयन किया गया है एवं सांख्यिकीय परीक्षण और प्रतिगमन विश्लेषण तथा अनोबा परीक्षा के माध्यम से निधारित परिकल्पनाओं को सिद्ध किया गया है।

समंकों का विश्लेषण Spss 20.0 Version पर किया गया एवं परिकल्पनाओं का परीक्षण 0.5 के सार्थकता पर किया गया है। शिक्षित महिलाओं के रोजगार अवसरों की संभावनाओं का प्रभाव सामाजिक परिवेश में वृद्धि पर सकारात्मक है।

तालिका क्र.1 Descriptive Statistics रोजगार अवसरों की संभावनाओं एवं सामाजिक परिवेश में वृद्धि

	Mean	Std. Deviation	N
सामाजिक परिवेश में वृद्धि	63.4967	15.92846	300
रोजगार अवसरों की संभावनाओं	21.8433	5.79748	300

तालिका क्र.2 Correlations रोजगार अवसरों की संभावनाओं एवं सामाजिक परिवेश में वृद्धि

	सामाजिक परिवेश में वृद्धि	रोजगार अवसरों की संभावनाएं
Pearson सामाजिक परिवेश में वृद्धि	1.000	.771
Correlation रोजगार अवसरों की संभावनाओं	.771	1.000
Sig. (1-tailed) सामाजिक परिवेश में वृद्धि	-	.000
रोजगार अवसरों की संभावनाओं	.000	-
सामाजिक परिवेश में वृद्धि	300	300
रोजगार अवसरों की संभावनाओं	300	300

निर्वचन

दोनों कारकों के मध्य संबंध जानने हेतु तालिका क्र.2 का निर्माण किया गया है, जिसमें दोनों कारक 'रोजगार अवसरों की संभावनाओ' व 'सामाजिक परिवेश में वृद्धि' के मध्य पियर्सन सहसंबंध परीक्षण करने पर 0.771 मान प्राप्त हुआ है तथा सार्थकता मूल्य (p-value) का मान 0.000 जो स्तरीय मान 0.05 से कम है।

अतः यह निष्कर्ष निकलता है कि दोनों कारकों के मध्य पियर्सन मान व सार्थकता मूल्य (p-value) स्तर मान 0.05 से कम होने पर कारकों के मध्य मजबूत व सार्थक संबंध होता है। साथ ही माडल समरी में प्रतिगमन विश्लेषण का प्रयोग दोनों कारकों के मध्य मजबूत सकारात्मक संबंध को ज्ञात करने हेतु किया गया है।

तालिका क्र.3 Model Summary रोजगार अवसरों की संभावनाओं एवं सामाजिक परिवेश में वृद्धि

Model	R	R Square	Adjusted R Square	Std. Error of the Estimate	Change Statistics					Durbin - Watson
					R Square Change	F Change	df1	df2	Sig. F Change	
1	.771[a]	.595	.594	10.15440	.595	437.715	1	298	.000	1.790

a. Predictors: (Constant), रोजगार अवसरों की संभावनाओं

b. Dependent Variable सामाजिक परिवेश में वृद्धि

निर्वचन

माडल समरी के अध्ययन से स्पष्ट होता है कि लिनियर सहसंबंध गुणांक **R** मान 0.771 है, जो आर. स्क्वेयर (0.595) तथा एडजस्टेड आर.स्क्वेयर (0.594) से अधिक है। आर.स्क्वेयर व एडजस्टेड आर.स्क्वेयर के मान में निकटता दिखाई दे रही है। अतः यह निष्कर्ष निकलता है कि दोनों कारकों के मध्य संबंध है। एडजस्टेड आर.स्क्वेयर (गुणांक का निर्धारण) का मान 0.595 प्राप्त हुआ है, जो यह दर्शाता है कि 'रोजगार अवसरों की संभावनाओं' एवं सामाजिक परिवेश में वृद्धि स्तर के मापदण्ड पर 59.5% खरा है।

तालिका क्र.4 ANOVA[a] रोजगार अवसरों की संभावनाओं एवं सामाजिक स्थिति में वृद्धि

Model		Sum of Squares	Df	Mean Square	F	Sig.
1	Regression	45133.655	1	45133.655	437.715	.000[b]
	Residual	30727.342	298	103.112		
	Total	75860.997	299			

a. Dependent Variable: सामाजिक परिवेश में वृद्धि

b. Predictors: (Constant), रोजगार अवसरों की संभावनाओं

निर्वचन

तालिका क्र. 4 के अध्ययन से स्पष्ट होता है कि रोजगार अवसरों की संभावनाओं व सामाजिक परिवेश में वृद्धि में वृद्धि के बीच संबंध को जानने के लिए 'अनोवा परीक्षण' का प्रयोग किया गया है। तालिका के

अध्ययन से ज्ञात होता है कि F का मान 437.715 है, जो सारणीमान 2.47 से अधिक है व सार्थकता मूल्य .000[a] है, जो स्तरीय मान 0.05 से कम है।

अतः यह निष्कर्ष निकलता है कि शून्य परिकल्पना को अस्वीकृत कर वैकल्पिक परिकल्पना को स्वीकृत किया जाता है व शोध अध्ययन को आगे बढ़ाया जाता है।

तालिका क्र. 5 Coefficients[a] रोजगार अवसरों की संभावनाओं एवं सामाजिक परिवेश में वृद्धि

Model		Unstandardized Coefficients		Standardized Coefficients	t	Sig.	95.0% Confidence Interval for B	
		B	Std. Error	Beta			Lower Bound	Upper Bound
1	(Constant)	17.206	2.289		7.517	.000	12.701	21.710
	रोजगार अवसरों की संभावनाओं	2.119	.101	.771	20.922	.000	1.920	2.319

a. Dependent Variable सामाजिक परिवेश में वृद्धि

निर्वचन: तालिका क्र.5 के अध्ययन से स्पष्ट होता है कि दोनों चरों के मध्य Coefficients[a] ज्ञात किया गया है। सामाजिक परिवेश में वृद्धि को निर्भर चर तथा रोजगार अवसरों की संभावनाओं को स्वतंत्र चर माना गया है। इस अध्ययन हेतु सबसे पहले बीटा स्तर का प्रयोग किया गया है। तत्पश्चात् टी टेस्ट(t) का उपयोग किया है। तालिका के अध्ययन से ज्ञात होता है कि (t) टेस्ट का मान 7.517 है, जो अधिक है। लिनियर समीकरण Y = 17.206 + 2.119 X है, जो कि सकारात्मक रेखीय संबंध को इंगित करता है। 0.05 स्तर पर Std. Error का मान .101 है।

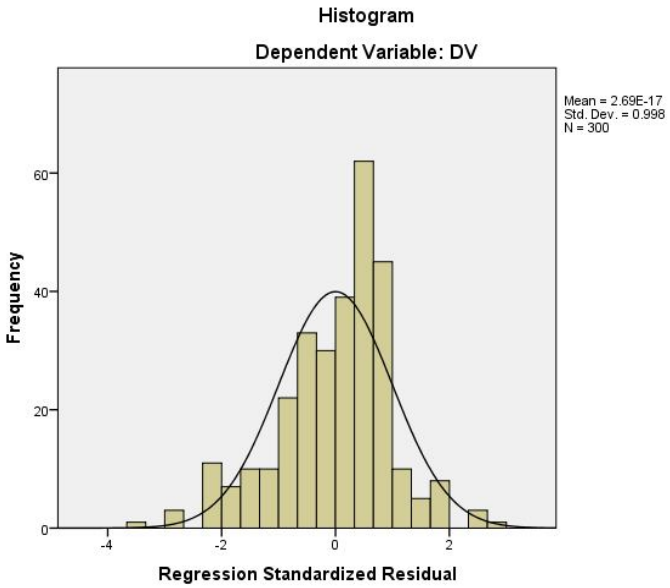

हिस्टोग्राम 1 रोजगार अवसरों की संभावनाओं एवं सामाजिक परिवेश में वृद्धि

निर्वचन

रेखाचित्र क्र. 1 से स्पष्ट होता है कि हिस्टोग्राम, जो सेम्पल प्रसामान्य बंटन (Normal Distribution Plot) है। यह सामान्य रूप से विभाजित है, इनका कुल मान 1 होता है। रेखाचित्र के अध्ययन से ज्ञात होता है कि चरों का अधिक झुकाव किसी भी ओर नहीं है, जो अध्ययन कार्य को उचित बताता है। किए गए विश्लेषण से यह निष्कर्ष निकलता है कि रोजगार के अवसरों की सम्भावनाओं का प्रभाव सामाजिक परिवेश में वृद्धि पर सकारात्मक है। यह 'लिनियर सह संबंध गुणांक' को प्रस्तुत करता है। यह अवलोकित एवं सांकेतिक मूल्य पर आधारित विचरण के मध्य मजबूत संबंध को दर्शाता है।

शोध निष्कर्ष

इस शोध में प्राथमिक डाटा के आधार पर प्रश्नावली का निर्माण किया गया तथा इन्दौर शहर की 300 शिक्षित महिलाओं का चयन निर्णायक विधि के आधार पर किया गया। यह भी शिक्षित महिलाएं सेवा क्षेत्र से जुड़ी हुई थीं। प्रश्नावली में पूछे गये प्रश्न क्षमता के अनुरूप रोजगार, सामाजिक परिवेश पर प्रभाव एवं व्यावसायिक शिक्षा से संबंधित थे।

रोजगार की सूचना ज्यादातर इंटरनेट के माध्यम से प्राप्त करती हैं, जिनका प्रतिशत 57.3 है, उसके बाद 20 प्रतिशत महिलायें समाचार पत्र एवं पत्रिकाओं के माध्यम से एकत्रित करती हैं, 8 प्रतिशत रोजगार पंजीकृत हैं, 83 प्रतिशत मित्र एवं रिश्तेदार से सहायता प्राप्त करती हैं तथा शेष 6.3 प्रतिशत अन्य माध्यमों का चुनाव करती हैं जैसे फेसबुक क्लब रोजगार से संबंधित सेमिनार, कान्फ्रेन्स आदि।

रोजगार के अवसर की तलाश में उन्हें विभिन्न प्रकार की असमानताओं का सामना करना पड़ा जैसे - असमान वेतन, रात की पाली, यातायात के साधनों का अभाव, 54.3 प्रतिशत महिलाओं का कहना है कि उनके साथ किसी प्रकार का भेदभाव नहीं हुआ तथा 9.3 प्रतिशत महिलाएं कुछ भी कहने में असमर्थ हैं। हो सकता है कि उन्हें रोजगार के अवसर आसानी से उपलब्ध हो गये या फिर उन्होंने अपना स्वयं का व्यवसाय शुरू किया हो।

उदारीकरण की एक सूत्रीय योजना को पूरा करने के लिए सात साल लगातार किए गए जोरदार प्रयासों के बावजूद हम फिर से उसे स्थिति में पहुँच गए हैं जहाँ से शुरुआत की थी। उदरीकरण नीतियों के लिंग निरपेक्ष स्वरूप को लेकर राज्य अर्थव्यवस्था में महिलाओं के लिए कुछ विशेष नहीं किया जा रहा है। अधिकांश महिलाएं असंगठित क्षेत्र में ही काम कर रही हैं तथा उनकी पहुँच बहुत सीमित है। सुचारू प्रक्रिया के बाद महिलाओं पर पड़ने वाले नकारात्मक प्रभाव का मूल्यांकन लंबे से स्थापित प्रवृतियों के रूप में किया जाता रहा है।

सुझाव

प्रस्तुत शोध अध्ययन के द्वारा शिक्षित महिलाओं के लिए रोजगार की संभावनाएं के सन्दर्भ में निम्न सुझाव दिये गये हैं -

- व्यावसायिक शिक्षा पर जोर देना चाहिये, क्योंकि आधुनिक रोजगार हेतु शिक्षा प्रणाली बेहतर कौशल विकास विकसित करने में अक्षम है। इसके लिए व्यवसाय केन्द्रित शिक्षण पद्धति को अपनाना होगा।

- पारंपरिक रूप से भारत की अर्थव्यवस्था कृषि पर अत्यधिक निर्भर है। अतः कृषि क्षेत्र में कार्यों को प्रोत्साहन देना होगा और इसमें नये रोजगार अवसर बनाने होंगे।
- बुनियादी शिक्षा गुणवत्ता के साथ पूर्ण हो तथा सभी शिक्षित महिलाओं के लिए कृषि, सेवा क्षेत्र तथा उद्योग के क्षेत्र में रोजगार के अवसरों में वृद्धि हो।
- शिक्षित महिलाओं की सामाजिक स्थिति में सुधार किया जाये।
- शिक्षित महिलाओं को उनकी क्षमताओं के अनुसार रोजगार मिलना चाहिए, जिसके अन्तर्गत उनके साथ किसी भी प्रकार का भेदभाव नहीं होना चाहिये।
- कार्यस्थल पर उनके द्वारा किये गये कार्यों को उचित प्राथमिकता देनी चाहिए तथा वेतन उनके कार्यों के आधार पर समान रूप से वितरित किया जाना चाहिए।
- शिक्षा व्यक्ति के दृष्टिकोण को व्यापक बनाती है अतः शिक्षा का स्तर और ऊँचा होना चाहिये जिससे घरेलू हिंसा में कमी की जा सके।
- शिक्षित महिलाओं में आत्मनिर्भरता, परिपक्वता एवं निर्णय लेने की इच्छाशक्ति को स्वयं सहायता समूह के द्वारा और दृढ़ बनाया जा सकता है।
- शिक्षित महिलाओं के जीवन स्तर में सुधार के और प्रयास किये जाने चाहिये जो कि राज्य सरकार का मुख्य उत्तरदायित्व है।

References

1 Baruah, B. (2013). Role of Electronic Media in Empowering Rural Women Education of N.E. India. ABHIBYAKTI: Annual Journal, 1, 23-26.

2 Dasarati Bhuyan " Empowerment of Indian Women: A challenge of 21st Century" Orissa Review, 2006.

3 Deshpande, S., and Sethi, S., (2010). Role and Position of Women Empowerment in Indian Society. International Referred Research Journal, 1(17), 10-12.

4 Dhruba Hazarika "Women Empowerment in India : a Brief Discussion" International Journal of Educational Planning & Administration. Volume 1, Number 3 (2011)

5 Goswami, L. (2013). Education for Women Empowerment. ABHIBYAKTI: Annual Journal, 1, 17-18.

6 Kadam, R. N. (2012). Empowerment of Women in India- An Attempt to Fill the Gender Gap. International Journal of Scientific and Research Publications, 2(6), 11-13.

7 Kishor, S. and Gupta, K. (2009), Gender Equality and Women''s Empowerment in India, NATIONAL FAMILY HEALTH SURVEY (NFHS-3) INDIA, 2005-06, International Institute for Population Sciences, Mumbai.

8 Nagaraja, B. (2013). Empowerment of Women in India: A Critical Analysis. Journal of Humanities and Social Science (IOSR-JHSS), 9(2), 45-52 [WWW page]. URL http: www.Iosrjournals.Org/empowerment.html.

9 Pankaj Kumar Baro1 & Rahul Sarania "Employment and Educational Status: Challenges of Women Empowerment in India", A Peer-Reviewed Indexed International Journal of Humanities & Social Science.

10 Suguna, M., (2011). Education and Women Empowerment in India. ZENITH: International Journal of Multidisciplinary Research, 1(8), 19-21.

11 Vinze, Medha Dubashi (1987) "Women Empowerment of Indian : A Socio Economic study of Delhi" Mittal Publications, Delhi.

12http://www.slideshare.net/puneetsharma5688/women-empowermentpuneet-sharma.